International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

भारत म्यांमार सीमा का सामरिक महत्व:भारतीय सुरक्षा के सन्दर्भ में

डॉ. सतीश चन्द्र जोशी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन
लक्ष्मण सिंह महर राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, पिथौरागढ. (उत्तराखण्ड)

सारांश आज भारत की सीमा पर स्थिति म्यांमार में बढ़ते संकट और मणिपुर में जारी जातीय संघर्ष के कारण इस क्षेत्र में बढ़ते तनाव ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अब एक गंभीर खतरा पैदा कर दिया है, साथ ही विद्रोही समूहों द्वारा भी अधिक अस्थिरता की संभावना भी जताई जा रही है। भारत के रक्षा मंत्रालय का एक हालिया बयान इस बात की पुष्टि भी करता है कि म्यांमार में शांति और स्थिरता ''भारत के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण'' है। इस सीमा क्षेत्र में मुद्दों को हल करने के लिए एक सुव्यवस्थित दृष्टिकोण की आज आवश्यकता है, और नई दिल्ली की म्यांमार नीति में कूटनीतिक बारीकियाँ पहला कदम भी हो सकती हैं। म्यांमार में भारत की हिस्सेदारी जटिल और बहुआयामी भी है। जो अपर्याप्त सैन्य बुनियादी ढांचे के कारण भारत–म्यांमार सीमा का इलाका विशेष रूप से असुरक्षित है। सीमा सुरक्षा सैन्य शासन के साथ नई दिल्ली के संबंधों का प्राथमिक चालक है। भारत–म्यांमार सैन्य सहयोग ने विद्रोही समूहों को नियंत्रण में रखने की कोशिश की, लेकिन म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्रों पर जुंटा का नियंत्रण हाल ही में कम हो गया है। विद्रोही समूह फिर से उभर रहे हैं और खुली सीमाओं ने उन्हें सुरक्षा कर्मियों से बचने की अनुमति दे दी है। चूंकि म्यांमार में संघर्ष तेज हो गया है और प्रतिरोधी ताकतें सीमा क्षेत्रों में सुरक्षा हितधारकों के रूप में उभर रही हैं, इसलिए उन पर विचार करना आज भारत देश के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो गया है।

मुख्य शब्द म्यांमार, सीमा, सुरक्षा, सैन्य शासन आदि

प्रस्तावना नई दिल्ली म्यांमार में बीजिंग का मुकाबला करना चाहती है, जो जुंटा के साथ अपने संबंधों के अलावा जातीय सशस्त्र संगठनों (ईएओ) के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखकर ''गाजर और छड़ी'' की नीति अपनाता है। भारत के देश में अन्य हित भी हैं, जैसे कनेक्टिविटी बुनियादी ढांचा। कलादान मल्टीमॉडल परियोजना दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापार को बढ़ावा देगी और पास में चीन समर्थित क्याउकप्यू बंदरगाह को भी संतुलित करेगी। इस परियोजना में पहला मोड अब कार्यात्मक है, लेकिन चीन राज्य में पलेतवा से पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम में जोरिनपुई तक सड़क मार्गों के माध्यम से आगे की कनेक्टिविटी चिन राज्य में राजनीतिक स्थिति पर निर्भर होगी, वहां प्रतिरोध बल बड़े पैमाने पर क्षेत्र को नियंत्रित करते हैं।[1] वर्ष 2023 के 13 नवंबर को चीनी बलों के हमलों ने फलम टाउनशिप के रिखावदार और भारतीय सीमा पर ख्वामावी टाउनशिप में जुंटा ठिकानों पर अपना नियंत्रण बढ़ा दिया है। इससे पहले, उसने सीमा से लगे तमू जिले के खम्पत नामक व्यापारिक शहर पर भी कब्जा कर लिया था। प्रतिरोध सीमा क्षेत्र पर अधिक नियंत्रण हासिल करने के लिए दो और शिविरों से जुंटा को खत्म करना चाहता है। ब्रदरहुड एलायंस द्वारा शान राज्य में ऑपरेशन 1027, जिसमें रखा इन राज्य की अराकान सेना भी शामिल थी, ने अक्टूबर के अंत में कई शहरों में 100 से अधिक शिविरों से सेना को बाहर निकाल दिया। भारत और बांग्लादेश की सीमाओं के करीब राखीन राज्य में विपक्ष के खिलाफ जुंटा गोलाबारी और कार्रवाई

का असंगत उपयोग कर सकता है। चीन और म्यांमार की बड़े पैमाने पर बामर सेना के बीच दुश्मनी कम से कम द्वितीय विश्व युद्ध से चली आ रही है। चीन ने जापानी आक्रमणकारी सेनाओं के खिलाफ ब्रिटिश और भारतीय सैन्य अधिकारियों के साथ लड़ाई लड़ी, और बामर्स को एक कब्जे वाले दुश्मन के सहयोगियों के रूप में देखा। ब्रिटिशों द्वारा चीन राज्य जैसे सीमांत क्षेत्रों से चुनिंदा रूप से 'मार्शल जातियों' की भर्ती की गई, जिससे बमार स्वतंत्रता नेताओं के बीच पहाड़ी जातीयताओं के प्रति अविश्वास पैदा हो गया। चीन ने जुंटा के प्रति उग्र प्रतिरोध प्रस्तुत किया है, जिसने चीन क्षेत्रों के बड़े हिस्से पर किसी भी प्रभावी नियंत्रण की कमी के कारण हवाई हमलों का सहारा लिया है। जुंटा के खिलाफ लड़ाई में चीन नेशनल फ्रंट (सीएनएफ) के साथ कई चीन प्रतिरोध ताकतें एक साथ आई हैं, जिनमें कुछ भारतीय जातीय समूह भी शामिल हैं, जो कैंप विक्टोरिया में बीएसएफ मुख्यालय जैसे सीमा के करीब और गहरे हवाई हमलों को आकर्षित कर रहे हैं। चीन राज्य के रणनीतिक थैंटलांग शहर में भारी बमबारी ने पूरी आबादी को पास के राहत शिविरों और भारत के मिजोरम राज्य में स्थानांतरित कर दिया है।[2] विपक्ष की तुलना में शासन की बेहतर सैन्य क्षमताओं को देखते हुए, नई दिल्ली के जुंटा के साथ संबंधों में कोई बड़ा बदलाव नहीं देखा जा सकता है, लेकिन असंतुष्टों पर कठोर कार्रवाई और गंभीर मानवीय स्थिति के प्रति उदासीनता, जुंटा शासन की भारी अंतरराष्ट्रीय आलोचना को आकर्षित करती रहेगी। भले ही आर्थिक प्रतिबंध इसे रोकने में विफल रहे हों, फिर भी उनके जारी रहने और बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है, जिससे राजनयिक व्यस्तताओं के लिए जगह कम हो जाएगी। नेपीटॉ के साथ बातचीत में इस बात पर प्रकाश डाला जाना चाहिए कि आने वाले समय में सहयोग के रास्ते और अधिक प्रतिबंधित हो सकते हैं। म्यांमार में कई सुरक्षा हितधारकों को देखते हुए, किसी एक खिलाड़ी पर निर्भर रहना भारत के दीर्घकालिक हितों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता है। ब्रिटिश शासन के दौरान एक साझा अतीत एक व्यापक रिश्ते को उजागर करता है, जो वर्तमान में प्रमुख रणनीतिक प्रतिबद्धताओं के पुनरुद्धार के लिए आधार तैयार करता है। स्थानीय प्रतिरोध की अधिक संभावनाएँ हैं, जैसे कि चीन सीमावर्ती क्षेत्रों पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करना, और उनके पूरी तरह से शांत होने की संभावना नहीं है। नई दिल्ली सीमा क्षेत्र में सुरक्षा को स्थिर करने के लिए चीन राज्य में ईएओ के साथ बहुमुखी स्वतंत्र समीकरणों को बढ़ावा दे सकती है, और स्थिति सामने आने पर संचार के उपयोगी चेनल खोल सकती है। इस उथल–पुथल भरे समय में, चूँकि म्यांमार कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, इसलिए उन रणनीतियों पर गहराई से विचार करना महत्वपूर्ण हो जाता है जो देश को शांति और स्थिरता की ओर ले जा सकती हैं। इस संकट से निपटने के लिए एक रास्ता तैयार करके, संभावित समाधान पेश करने वाले विभिन्न तरीकों की पहचान की जा सकती है। भारत के मिजोरम में भारत–म्यांमार सीमा पर एक म्यांमारवासी भारतीय पक्ष की ओर देखता हुआ। (मार्च 20, 2021)[3]म्यांमार, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध देश, वर्तमान में शांति और सुरक्षा के लिए कुछ गंभीर और महत्वपूर्ण आंतरिक बाधाओं से जूझ रहा है।

म्यांमार और भारत के रिस्ते ऐतिहासिक संदर्भ में आज भी इन दोनो देशो की गहराई से जाकर, देखा जाए तो यह वास्तव में म्यांमार की वर्तमान स्थिति को समझा जा सकता है। इस देश का अशांत अतीत गहन जातीय तनाव और राजनीतिक मामलों में सेना के व्यापक प्रभुत्व से चिह्नित है। अनगिनत वर्षों के दौरान, म्यांमार ने सैन्य शासन की अटूट पकड़ से जूझते हुए स्वायत्तता की चाह रखने वाले विभिन्न जातीय समूहों के लिए प्रजनन स्थल के रूप में काम किया है। म्यांमार का परिदृश्य 1800 के दशक के उत्तरार्ध से विभिन्न विद्रोही संगठनों के उदय और विकास से प्रभावित रहा है। यह

घटना देश के उपनिवेशीकरण और जातीय विविधता के जटिल इतिहास में गहराई से निहित है। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल ने महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन लाए जिससे अनजाने में म्यांमार के विविध समूहों के बीच जातीय तनाव पैदा हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यह तनाव और भी बढ़ गए जब भविष्य की स्वायत्तता या स्वतंत्रता की आकांक्षाओं से प्रेरित होकर विभिन्न जातीय गुटों ने खुद को मित्र राष्ट्रों या जापानियों के साथ जोड़ लिया। 1948 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, म्यांमार की नवेली सरकार ने जातीय प्रतिनिधित्व के मुद्दों को संबोधित करने के लिए संघर्ष किया, जिससे अनजाने में विभिन्न जातीय समूहों को हाशिए पर धकेल दिया गया। परिणामस्वरूप, 1947 में करेन नेशनल यूनियन जैसे सशस्त्र गुट उभरे, जिससे जातीय विद्रोह के एक लंबे युग की शुरुआत हुई। 1962 में, जनरल ने विन के सैन्य तख्तापलट ने अल्पसंख्यक समूहों को अलग–थलग और वंचित करते हुए बर्मी संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियों के माध्यम से इन विभाजनों को तेज कर दिया। इससे अतिरिक्त जातीय मिलिशिया का गठन हुआ।[4] 2011 में अर्ध–नागरिक सरकार में परिवर्तन ने थोड़े समय के लिए शांति की आशा जगाई हालाँकि, यह रोहिंग्या संकट और 2017 में एक गंभीर सैन्य कार्रवाई जैसी घटनाओं से प्रभावित हुआ था, जिसकी जातीय सफाए के आरोपों के लिए अंतरराष्ट्रीय निंदा हुई थी। 2021 में सैन्य तख्तापलट के बाद स्थिति और खराब हो गई, जिसने न केवल लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार को पलट दिया, बल्कि व्यापक अशांति भी फैल गई।[5] लोकतंत्र के प्रति आशावाद की प्रतीक आंग सान सू की के उद्भव ने राजनीतिक क्षेत्र में भारी बदलाव ला दिया। 1988 के विद्रोह के बाद 1980 के दशक के अंत में राजनीति में उनकी भागीदारी ने म्यांमार में लोकतंत्र और जातीय सद्भाव के लिए लड़ाई में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व किया। 1990 और 2000 के दशक के दौरान, सख्त अलगाव के तहत घर पर बिताया गया उनका समय, साथ ही सेना द्वारा लगाए गए मजबूत नियंत्रण ने महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश कीं। इस सैन्य प्रभुत्व ने न केवल राजनीतिक परिदृश्य पर ग्रहण लगा दिया, बल्कि चल रहे संघर्ष को भी बढ़ा दिया। सत्ता पर सेना की अटूट पकड़ के कारण स्थिति और भी जटिल हो गई, जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय तक उथल–पुथल और अशांति बनी रही। इस पूरे युग में लोकतंत्र और मानवाधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष चलता रहा, जिसे अक्सर सत्तावादी शासन से गंभीर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इस संघर्ष की लंबी प्रकृति का देश के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने पर गहरा प्रभाव पड़ा जो सिर्फ राजनीति से कहीं आगे तक फैला हुआ था। म्यांमार का राजनीतिक विन्यास कई महत्वपूर्ण घटनाओं से बना है, जिनमें से प्रत्येक विभिन्न व्यक्तियों द्वारा की गई विशिष्ट गतिविधियों और विकल्पों से प्रभावित है। कई मौकों पर कारावास की अवधि के साथ, जिसमें नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (एनएलडी) की प्रमुख आंग सान सू की को म्यांमार सेना द्वारा घर में नजरबंद किया गया था, जो देश पर शासन कर रहे थे। यह कृत्य राजनीतिक असहमति को दबाने के सेना के प्रयास का हिस्सा बने। 2011 में सैन्य शासन से आंशिक रूप से नागरिक सरकार में परिवर्तन एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इस परिवर्तन में नागरिक नेतृत्व को शामिल करना शामिल था और यह सू की के नेतृत्व वाले एनएलडी के प्रयासों से संभव हुआ, जिन्होंने लोकतांत्रिक सुधारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एनएलडी की भागीदारी और सक्रिय समर्थन इस बदलाव को शुरू करने में महत्वपूर्ण कारक थे, भले ही सेना ने पर्याप्त प्रभाव बरकरार रखा। फिर भी, म्यांमार में परिस्थितियाँ जटिल और नाजुक बनी रहीं। सू की के मार्गदर्शन में 2015 के चुनावों में एनएलडी की जीत के बाद, देश 2017 में रोहिंग्या संकट से जूझ रहा था। इस संकट ने सू की की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को काफी नुकसान पहुंचाया और म्यांमार के भीतर स्थायी जातीय विवादों पर जोर दिया। 2021 में सैन्य अधिग्रहण के साथ स्थिति काफी खराब हो गई, जिसने सू की के नेतृत्व वाली लोकतांत्रिक रूप

से निर्वाचित सरकार को अपदस्थ कर दिया। इस तख्तापलट के कारण म्यांमार में उथल–पुथल मच गई, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न विद्रोही समूह पुनर्जीवित हो गए और नए गुटों का गठन हुआ, जिससे शांति की दिशा में यात्रा जटिल हो गई। आंग सान सू की का प्रभाव और प्रभाव अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन अलग–अलग राय मिलती है क्योंकि राष्ट्र अपने विविध जातीय समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। म्यांमार अभी भी अपने कई विद्रोही संगठनों की विशेषता वाले आंतरिक संघर्षों के जटिल जाल में फंसा हुआ है। यह समूह जातीयता और राजनीति से संबंधित गहरी जड़ों वाली चुनौतियों को दर्शाते हैं जो देश के भीतर दीर्घकालिक शांति और स्थिरता प्राप्त करने के प्रयासों में बाधा बनी हुई हैं। ऑपरेशन 1027 के कार्यान्वयन के कारण मामलों की वर्तमान स्थिति अपनी तीव्रता में बढ़ गई है, जो विभिन्न जातीय सशस्त्र समूहों द्वारा सावधानीपूर्वक सुनियोजित जवाबी कार्रवाई है। इस रणनीतिक कदम ने संघर्ष के रंग–रूप पर गहरा प्रभाव डाला है, इसकी सीमाएं ग्रामीण क्षेत्रों से आगे बढ़ गई हैं और इसके क्षेत्र में व्यापक जनसांख्यिकीय व्यक्तियों को शामिल किया गया है। चल रहे संघर्ष ने विस्थापन और शरणार्थियों से संबंधित एक महत्वपूर्ण समस्या को जन्म दिया है। कई लोगों को अपनी सुरक्षा के लिए अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है, या तो उन्हें म्यांमार में ही शरण लेनी पड़ी है या पड़ोसी देशों में भागना पड़ा है। इस बड़े पैमाने पर पलायन के परिणाम स्वरूप तत्काल मानवीय संकट पैदा हो गया है जो पूरे क्षेत्र को प्रभावित करता है। पिछले कुछ वर्षों में मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाएं आम और व्यापक रही हैं। सशस्त्र बल और अन्य मिलिशिया अक्सर निर्दोष व्यक्तियों के खिलाफ घृणित कृत्यों में संलग्न होते हैं, जैसे उन्हें सीधे तौर पर मार देना, गलत तरीके से उन्हें बंदी बनाना और उन पर अकल्पनीय क्रूरता करना।[6] अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने सेना के व्यवहार की कड़ी निंदा की है, फिर भी ये नृशंस कार्रवाइयां लगातार जारी हैं और इनकी गंभीरता रुकने या कम होने के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। आजादी के बाद से ही म्यांमार को राष्ट्र निर्माण में विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्र–निर्माण और लोकतंत्रीकरण की चुनौती को आंतरिक और बाह्य कारकों के संयोजन से और भी जटिल बना दिया गया है। सेना, जो सत्ता पर कब्जा करने के लिए दृढ़ है और नियंत्रण छोड़ने के लिए अनिच्छुक है, एक महत्वपूर्ण आंतरिक बाधा प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, बामर बहुसंख्यक और विभिन्न जातीय समूहों (ईजी) के बीच गहरा अविश्वास है, जो धार्मिक तनाव और जातीय सशस्त्र संगठनों (ईएओ) के बीच विश्वास की कमी से और भी जटिल है। ये समूह अपने हितों की रक्षा के लिए हथियारों पर भरोसा करते हैं, जो संघीय संघ की प्रकृति, आवश्यक लोकतंत्र के प्रकार और एक प्रतिनिधि और जवाबदेह सरकार में सेना की भूमिका जैसे बुनियादी मामलों पर समझौते की अनुपस्थिति को उजागर करते हैं। म्यांमार के सामने आने वाले मुद्दों का सामना करने में संयुक्त राष्ट्र और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों की सीमित प्रभावकारिता उल्लेखनीय है। देश की लंबे समय से चली आ रही समस्याओं के समाधान की दिशा में उनके प्रयास उल्लेखनीय रूप से आगे नहीं बढ़े हैं। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य पर जोर देता हैः हालाँकि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए म्यांमार के भीतर समाधान खोजना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, फिर भी आगे बढ़ने का एक रास्ता है। किसी समाधान को प्राप्त करने के लिए आंतरिक और बाहरी दोनों हितधारकों की ईमानदारी से भागीदारी की आवश्यकता होती है, जिन्हें सावधानीपूर्वक निर्मित योजना का पालन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण के लिए म्यांमार की जटिल जटिलताओं की व्यापक समझ, समावेशी बातचीत के प्रति समर्पण और उन विभाजनों को पाटने के लिए एकजुट प्रयास की आवश्यकता है जिन्होंने देश की शांति और स्थिरता की तलाश में बाधा उत्पन्न की है।[7]

निष्कर्ष म्यांमार में संकट का प्रभाव पूरे समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डालता है और एक स्थायी छाप छोड़ता है। हिंसा के अचानक विस्फोट से परे, जो एक गंभीर तस्वीर पेश करता है, इसने उथल–पुथल की एक लहर पैदा कर दी है जो लोगों के जीवन के ताने–बाने को बाधित कर देती है। इसके परिणाम बिखरी हुई आजीविका से लेकर गरीबी के बढ़ते स्तर तक सामने आते हैं, जिससे कई कमजोर आत्माएं और भी अधिक निराश्रित हो जाती हैं। इसके अलावा, यह उथल–पुथल प्रगति में बाधा डालती है और चल रहे विकास प्रयासों की राह में बाधा डालती है। म्यांमार में सुझाए गए समाधानों की सफलता में बाधा डालने वाली प्राथमिक बाधाएँ मुख्य रूप से वास्तविक राजनीतिक संकल्प की कमी, बाहरी भू–राजनीतिक प्रभाव और देश के भीतर गहरे आंतरिक विभाजन में निहित हैं। इन कारकों ने सामूहिक रूप से प्रगति में बाधा डाली है और प्रस्तावित उपायों को अप्रभावी बना दिया है। एक क्षेत्र जिसमें सावधानीपूर्वक जांच की आवश्यकता होती है वह असफल संकल्पों की जांच है। इन विफलताओं के पीछे के कारणों की गहराई से जांच करना और उनकी पेचीदगियों की अधिक व्यापक समझ हासिल करना जरूरी है। गहन विश्लेषण करने से, मूल्यवान अंतर्दृष्टि उजागर हो सकती है जो हमें भविष्य में अधिक प्रभावी और कुशल समाधान चुनने में मदद कर सकती है। इस प्रक्रिया में सतही स्तर के स्पष्टीकरणों से परे देखना और उन अंतर्निहित कारकों की खोज करना शामिल है जिन्होंने सफलता की कमी में योगदान दिया। ऐसा करने से, हमारे समस्या–समाधान दृष्टिकोणों को बेहतर बनाने के लिए पैटर्न या सामान्य नुकसान की पहचान की जा सकती है। अंततः, यह गहन परीक्षण हमें अपनी गलतियों से सीखने और ऐसी रणनीतियाँ विकसित करने की अनुमति देता है जो जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हों। जिससे इन दोनो देशों के रिस्ते सामान्य रह सकें यही मेरा इस शोध पत्र के माध्यम से दुनिया को समझाना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 एडेलमैन,जेरेमी,और एरोन, स्टीफन 1999'' सीमावर्ती क्षेत्रों से सीमाओं तकः साम्राज्य, राष्ट्र–राज्य और उत्तरी अमेरिकी इतिहास के बीच के लोग'' अमेरिकी ऐतिहासिक समीक्षा 104 (3) पृ0 814 क्रॉसरेफ

2 अमेरी, लियो 1944 .''अमेरी टू वेवेल, 28 सितंबर।'' सत्ता के हस्तांतरण 1942–7 में खंड 5, शिमला सम्मेलन, पृष्ठभूमि और कार्यवाही, 1 सितंबर 1944–28 जुलाई 1945,संस्करण निकोलस मानसेरघ और अर्नेस्ट लुम्बी।

3 अमृता बाजार पत्रिका 1945 ''बेतुकी योजना।'' मार्च 27. गूगल विद्वान

4 अमृत, सुनील एस 2013. बंगाल की खाड़ी को पार करना प्रकृति का प्रकोप और प्रवासियों का भाग्य कैम्ब्रिज, मास हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

5 बेली, क्रिस्टोफर, और हार्पर, टिम 2005 भूली हुई सेनाऐं ब्रिटिश एशिया का पतन, 1941–1945 कैम्ब्रिज, मास हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस का बेल्कनैप प्रेस

6 बेली, मार्टिन जे 2015 ''इंपीरियल ऑन्टोलॉजिकल सुरक्षा 'बफर स्टेट्स', अंतर्राष्ट्रीय संबंध और एंग्लो–अफगान संबंधों का मामला, 1808–1878।''

7 बेली, सुसान 2004 ''ग्रेटर इंडिया' की कल्पना इंडिक मोड में उपनिवेशवाद के फ्रांसीसी और भारतीय दृष्टिकोण।'' आधुनिक एशियाई अध्ययन पृ 38–44